तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी **(29 से 31 अगस्त 2020)**

''दक्षिण कोसल में रामकथा की व्याप्ति एंव प्रभाव'

इतिहास विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर द्वारा **''दक्षिण कोसल में रामकथा की व्याप्ति एवं प्रभाव''** विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन 29 से 31 अगस्त 2020, को अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) एवं सेंटर फॉर स्टडी ऑन हालिस्टिक डेवलपमेंट, रायपुर (छ.ग.) के संयुक्त तत्वाधान में किया गया।

इस वेबिनार का उद्देश्य दक्षिण कोसल क्षेत्र में भगवान श्री राम और रामकथा के विभिन्न रूपों पर विचार–विमर्श करना था। मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम से इस पावन भूमि का बड़ा गहरा सम्बन्ध है, जिसके कारण यह भू–भाग महत्वपूर्ण है। भगवान श्री राम की माता महारानी कौसल्या राजा भानुमंत की पुत्री थीं, इस नाते यह क्षेत्र भगवान श्रीराम का ननिहाल है। अपने वनवास काल के दौरान उन्होनें अपना अधिकांश समय यहीं पर व्यतीत किया था। जनश्रुति है कि उन्होनें यहाँ के 50 से अधिक स्थानों पर विश्राम किया था, जो आज भी यहाँ पर विद्यमान हैं। दक्षिण कोसल के जनसामान्य के हृदय में भगवान श्रीराम निवास करते हैं और जनसामान्य के जीवन के बहुत सारे आयामों जैसे स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, लोककला, संगीतकला, लोक साहित्य, जनजातीय साहित्य एवं कला तथा कृषि संस्कृति में प्रभु श्रीराम के दर्शन होते हैं।

छत्तीसगढ़ के कण-कण में बसे हैं राम, यहां के लोगों की जीवन शैली राममय : सुश्री उइके

राज्यपाल ''दक्षिण कोसल में राम कथा की व्याप्ति एवं प्रभाव'' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वेबशोध संगोष्ठी में हुई शामिल

रायपुर। छत्तीसगढ़ के कण-कण में राम बसे हैं। यहां के लोगों की जीवन शैली पूरी तरह से राममय हैं। उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक की यात्रा में भगवान श्री राम का प्रभाव है। छत्तीसगढ़ को दक्षिण कौसल के नाम से जाना जाता है। यह वह पुण्य भूमि है, जिसे भगवान श्रीराम का सान्निध्य मिला और अनेक पुण्य आत्माओं का भी जन्म हुआ है तथा अनेक ऋषि-मुनियों का आशीर्वाद प्राप्त है। यह विचार आज राज्यपाल सुश्री अनुसुईया उइके ने ''दक्षिण कोसल में राम कथा की व्याप्ति एवं प्रभाव'' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबशोध संगोष्ठी में व्यक्त किए। यह संगोष्ठी गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या, उत्तर प्रदेश शासन तथा सेंटर फॉर स्टडीज ऑन होलिस्टिक डेवलपमेन्ट रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई। राज्यपाल ने कहा कि मुझे बताया गया है कि यह संगोष्ठी ग्लोबल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रामायण तैयार करने की दृष्टि से आयोजित की जा रही है। यह विषय संपूर्ण भारतवासियों ही नहीं पूरे विश्व में हमारी भारतीय संस्कृति के जो उपासक हैं, उन सभी के लिए महत्वपूर्ण हैं।

राज्यपाल ने कहा कि यहां की भूमि और यहां के लोगों में भगवान श्रीराम का इतना प्रभाव है कि उनकी सुबह राम नाम के अभिवादन से होती है और जब वे किसी से मिलते हैं तो वे एक दूसरे से राम-राम कहकर अभिवादन करते हैं। उनके नाम में भगवान राम का उल्लेख मिलता है। हम यदि गांव में जाएं तो वहां के लोग रामचरित मानस का पाठ करते मिलते हैं और पुण्य लाभ लेते हैं। छत्तीसगढ़ के गांव-गांव में कई रामायण मंडली होती है, जिसके बीच प्रतियोगिता भी होती है। अभी भी कई स्थानों पर रामलीला का मंचन होता है। दशहरे के समय तो यहां की रौनक देखते ही बनती है।

उन्होंने कहा कि भगवान राम का संपूर्ण जीवन प्रेरणादायी है। उनके जीवन से हमें समन्वयवादी जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा मिलती है। हम छत्तीसगढ़ को देखें तो यहां भी समन्वयवादी संस्कृति मिलती है। यह सब भगवान श्रीराम के आशीर्वाद से ही संभव हो पाया है। छत्तीसगढ़वासियों के मन में भगवान श्री राम के प्रति अथाह प्रेम है। यहां एक समुदाय ऐसा भी है, जिसके सदस्य अपने पूरे शरीर में भगवान राम के नाम का गोदना गोदवा लेते हैं, भगवान श्री राम के प्रति ऐसा समर्पण शायद ही कहीं देखने को मिले। इसे रामनामी सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है।

उन्होंने कहा कि हम छत्तीसगढ़ में भगवान राम के प्रति प्रेम भाव की बात करें तो कवर्धा जिले में एक पंचमुखी बुढ़ा महादेव मंदिर का उल्लेख किया जाना चाहिए, जहां पर अनवरत रामधुन गाई जाती है। यही नहीं इस प्रदेश में भगवान श्रीराम इतने गहराई तक समाए हुए हैं कि एक मुसलमान कथा वाचक दाउद खान रामायणी जैसे महापुरूष हुए, जिनमें राम के प्रति इतनी आस्था थी कि आजीवन रामकथा का वाचन करते रहे और उन्हें पूरी रामकथा कंठस्थ थी।

राज्यपाल ने कहा कि छत्तीसगढ़ को भगवान राम का ननिहाल माना जाता है। यह माना जाता है कि रायपुर जिले के चन्द्रखुरी नामक गांव में माता कौशल्या का जन्म हुआ था, इसका प्रमाण है कि वहां माता कौशल्या का एकमात्र मंदिर स्थापित है। इस नाते भगवान राम को पूरे छत्तीसगढ़ का भांजा माना जाता है। इसलिए भांजे को श्रेष्ठ स्थान देने की परम्परा है और उनके पैर भी छुए जाते हैं। छत्तीसगढ़ को दण्डकारण्य भी कहा जाता है, जहां वनवास के दौरान भगवान राम अधिकतम समय व्यतीत किया था, जिस दक्षिण पथ मार्ग से वे लंका विजय के लिए गये उसे हम राम वन गमन पथ के नाम से जानते हैं। राज्य शासन द्वारा इसे विकसित करने की योजना बनाई गई है।

मुख्य वक्ता श्रीमती रेखा पाण्डेय ने कहा कि रामायण काल में दक्षिण कोसल एक ऐसा स्थान माना जाता है, जहां भगवान श्रीराम ने माता सीता एवं भ्राता लक्ष्मण के साथ वनवास का सर्वाधिक समय व्यतीत किया।

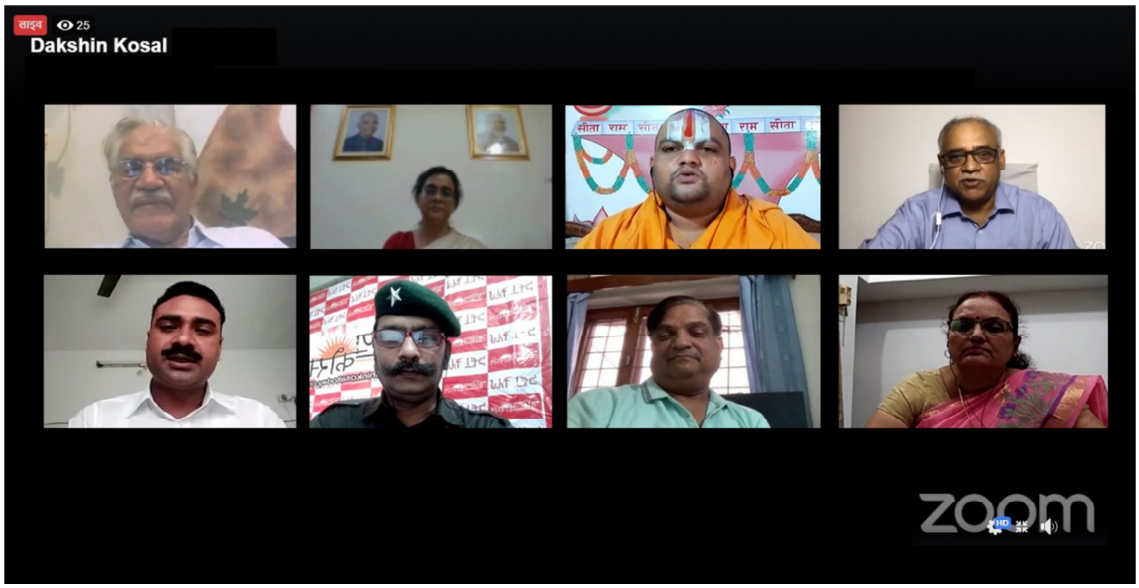
ताइव
25
Dakshin Kosal
zoom

शोध पत्र हेतु विषय एवं उप विषय

(1) दक्षिण कोसल की स्थापत्य कला मे रामकथा
अ- प्राचीन
ब- आधुनिक

(2) दक्षिण कोसल की मूर्तिकला में रामकथा
अ- प्राचीन
ब- आधुनिक

(3) दक्षिण कोसल की चित्रकला में रामकथा
अ- लोक चित्र
ब- पारम्परिक चित्र
स- आधुनिक चित्र

(4) दक्षिण कोसल की लोककला
अ- लोक साहित्य
ब- लोकगीत
स- लोक परम्परा
द- लोक कहावतें

(5) दक्षिण कोसल की संगीत कला मे रामकथा
अ- गायन
ब- वादन
स- नृत्य

(6) दक्षिण कोसल की रामलीला शैली एवं परम्परा
अ- मैदानी रामलीला
ब- मंचीय रामलीला
स- सौखिया रामलीला
द- रामायण मेले

(7) दक्षिण कोसल के जनजातीय कला एवं साहित्य मे रामकथा
(8) दक्षिण कोसल की कृषि संस्कृति में राम
(9) दक्षिण कोसल ऋषि परम्परा एवं रामायणकालीन ऋषि
(10) राम वनगमन मार्ग का भौगोलिक क्षेत्र

वेब संगोष्ठी की परिकल्पना

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, अयोध्या शोध संस्थान, उत्तर प्रदेश शासन एवं सेंटर फॉर स्टडी ऑन हॉलिस्टिक डेवलपमेंट, रायपुर छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्वाधान में "दक्षिण कोसल में रामकथा की व्याप्ति एवं प्रभाव" विषय पर तीन दिवसीय (29 से 31 अगस्त 2020) अंतर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस संगोष्ठी में रामकथा मर्मज्ञ राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों के व्याख्यान होंगे साथ ही संगोष्ठी के विभिन्न विषयों तथा उपविषयों पर शोध पत्र आमंत्रित किए गये है, जिनमें से चयनित एवं उपयोगी शोधपत्रों का प्रकाशन भी किया जाना है।

यह भी अवगत हो कि अयोध्या शोध संस्थान उत्तर प्रदेश शासन के द्वारा ग्लोबल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रामायण का निर्माण किया जा रहा है। इसी क्रम में छत्तीसगढ़ खंड का भी निर्माण होना है। चूंकि भगवान श्री राम का छत्तीसगढ़ से गहरा संबंध है तथा यहाँ के जन-जन के मन एवं संस्कृति में प्रभु श्री राम निवास करते है। जन सामान्य के किन किन आयामों प्रभु श्री राम उपस्थित है, यह इस शोध संगोष्ठी के माध्यम से जानने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही इस प्रकार के शास्वत आयोजन से ग्लोबल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रामायण के छत्तीसगढ़ खंड के निर्माण में सहायता प्राप्त होगी।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

शोध पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 28 अगस्त, 2020

शोध पत्र अधिकतम 3,000 शब्दों का हो सकता है।
कृपया Kruti Dev 010 या Unicode का प्रयोग करें। सारांश न भेजें, पूर्ण शोध पत्र ही स्वीकार्य। लेखक की सम्बद्धता हेतु पूर्ण पत्राचार पता, ईमेल एवं मोबाईल नम्बर सहित प्रेषित करें। शोध पत्र ईमेल के द्वारा निम्न पते पर ही प्रेषित किया जाना है।
officeofcshd@gmail.com
seminardakshinkosal@gmail.com
पंजीयन अनिवार्य एवं निःशुल्क है।
पंजीकृत प्रतिभागी को ई-प्रमाण पत्र दिया जाएगा।

महत्वपूर्ण सम्पर्क

प्रो. प्रवीण कुमार मिश्र 6306752735 | श्री ललित शर्मा 9754433714 | डॉ. नितेश कुमार मिश्र 9770014040

तीन दिवसीय
अंतर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी
(29 से 31, अगस्त 2020)
दक्षिण कोसल में रामकथा की व्याप्ति एवं प्रभाव

आयोजक
गुरु घासीदास (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
एवं
अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या, उत्तर प्रदेश
एवं
सेन्टर फॉर स्टडीज ऑन हॉलिस्टिक डेवलपमेंट, रायपुर (छ.ग.)

वेबीनार का लाइव प्रसारण दक्षिण कोसल के यूट्यूब चैनल एवं फेसबुक पेज पर किया जाएगा
https://www.youtube.com/channel/UCzBbjUBN/i_tXpDgec0nXoYw
https://www.facebook.com/Dakshin-Kosal-940575052814944/

तीन दिवसीय
अंतर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी
(29 से 31, अगस्त 2020)
दक्षिण कोसल में रामकथा की व्याप्ति एवं प्रभाव

मुख्य संरक्षक
प्रोफेसर अंजिला गुप्ता
कुलपति
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

संरक्षक
प्रो. बी.के.स्थापक
अध्यक्ष
सी.एस.एच.डी.
रायपुर, छत्तीसगढ़

प्रो. शैलेन्द्र सराफ
उपाध्यक्ष
फार्मेसी कौंसिल ऑफ इंडिया
दिल्ली

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
निदेशक
अयोध्या शोध संस्थान
उत्तर प्रदेश

संयोजक
श्री ललित शर्मा (इण्डोलॉजिस्ट)
संयोजक - ग्लोबल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रामायण
संपादक - दक्षिण कोसल टुडे डॉट कॉम
रायपुर, छत्तीसगढ़

संयोजक
प्रो. प्रवीण कुमार मिश्र
विभागाध्यक्ष
इतिहास विभाग, गुरु घासीदास
विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

आयोजन सचिव
डॉ. नितेश कुमार मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर
प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग
पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़

सम्मानीय सदस्य
प्रो. आर.एन. विश्वकर्मा | प्रो. राजन यादव | प्रो. पी.ए. घनश्याम,
प्रो. जी.एल. शर्मा | डॉ. सतीश देशपाण्डेय | डॉ. आनंद मूर्ति मिश्र
डॉ. अतुल तिवारी | डॉ. बलदाऊ राम साहू | डॉ. पीसी लाल यादव
डॉ. पुनीत राय | डॉ. मोहन साहू | डॉ. महेन्द्र मिश्र
डॉ. रामकिंकर पाण्डेय | डॉ. पुरुषोत्तम चन्द्राकर | डॉ. जितेन्द्र साहू
डॉ. विनय तिवारी | डॉ. उमेश पाण्डेय | महंत शिवानन्ददास
श्रीमती रेखा पाण्डेय | सुश्री शुभा रजक | श्री शिवकुमार पाण्डेय
श्री हरि सिंह क्षत्री | श्री विजय शर्मा | श्री हेमंत पाणिग्रही
श्री प्रताप पाण्डेय | श्री सोम वैष्णव | श्री राजेन ठाकुर

संगोष्ठी की प्रस्तावना

वर्तमान छत्तीसगढ़ को प्राचीन काल में दक्षिण कोसल के नाम से जाना जाता था। दक्षिण कोसल प्रकृति की गोद में बैठा एक सुन्दर शिशु की भांति दिखाई देता है। यहाँ की पुण्य भूमि में महानदी, शिवनाथ, हसदो, रेणुका, महान, पैरी, सोंढूर खारून, इन्द्रावती आदि नदियाँ प्रवाहित होती है। यह क्षेत्र प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के मानव का निवास स्थल रहा है। जिसके प्रमाण आज भी यहाँ विद्यमान है।
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम से इस पावन भूमि का बड़ा गहरा सम्बन्ध है जिसके कारण यह भू-भाग महत्व है। भगवान श्रीराम की माता अर्थात् महारानी कौशल्या राजा भानुमंत की पुत्री थी इस नाते यह क्षेत्र भगवान श्रीराम का ननिहाल है अपने वनवास काल के दौरान उन्होंने अपना अधिकांश समय यहीं पर व्यतीत किया था। जनश्रुति है कि उन्होंने यहाँ के 50 से अधिक स्थानों पर विश्राम किया था जो आज भी यहाँ पर विद्यमान है। इसके साथ ही ये क्षेत्र अरण्य प्रदेश है और यहाँ पर भारत के मैदानी भागों की तुलना में प्रारंभ से ही मानव आबादी कम रही है अर्थात ये क्षेत्र काफी शांत रहा है और साधना करने के लिये आदर्श है। इसी कारण से रामायण काल से अनेकों ऋषियों यथा शरभंग, वाल्मीकि, अगस्त्य, अंगिरा, अत्रि, गौतम, श्रृंगी, मुचकुन्द, मतंग, माण्डुक्य आदि के आश्रम यहाँ पर स्थित थे। यही कारण है कि दक्षिण कोसल के जनसामान्य के ह्रदय में भगवान श्रीराम निवास करते है और जनसामान्य के जीवन के बहुत सारे आयामों जैसे स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, लोक कला, संगीत कला, लोक साहित्य, जनजातीय साहित्य एवं कला तथा कृषि संस्कृति में प्रभु श्रीराम के दर्शन होते है। अतः इस शोध संगोष्ठी के माध्यम से दक्षिण कोसल क्षेत्र में भगवान श्रीराम और रामकथा किन-किन रूपों व्याप्त है इस पर विचार विमर्श किया जायेगा।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय भारत का एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय (बिलासपुर) छत्तीसगढ़ राज्य में केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के 25 न. के तहत् स्थापित है। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय सामाजिक और आर्थिक रूप से चुनौती वाले क्षेत्र में स्थित है। विश्वविद्यालय को उचित नाम महान संत गुरु घासीदास के सम्मान स्वरूप दिया गया जिन्होंने समाज में व्याप्त बुराईयों और समाज में प्रचलित अन्याय के खिलाफ एक अनवरत संघर्ष छेड़ा। विश्वविद्यालय एक आवासीय सम्बद्ध संस्था है। इसमें स्थानीय लोगों की शिक्षा की आवश्यकता के लगभग पूरे आयामों को शामिल किया गया है। इस विश्वविद्यालय ने सामुदायिक विकास के विस्तार के साथ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है, जैसे उन्नत भारत अभियान, कौशल विकास कार्यक्रम एवं युवाओं को शामिल करने की समाज की आकांक्षा को पूरा करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय कार्य कर रहा है।

अयोध्या शोध संस्थान

अयोध्या शोध संस्थान की स्थापना संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश, शासन द्वारा ऐतिहासिक तुलसी भवन अयोध्या में 18 अगस्त 1986 को की गई। यह संस्कृति विभाग की स्वायत्तशासी संस्था है। इस संस्था के कुछ प्रमुख उद्देश्य है, जैसे अयोध्या की कला संस्कृति एवं साहित्य, लोक साहित्य, इतिहास और परम्पराओं की पाण्डुलिपियों तथा वस्तुओं और शिल्प तथ्यों का संग्रह संरक्षण एवं अध्ययन करना, अवध की सांस्कृतिक विरासत से सम्बन्धित नष्ट और विलुप्त हो रही पुरालेखीय सामग्री को सुरक्षित रखना। ऐसे ही पावन उद्देश्यों को लेकर ये संस्था कार्य कर रही है।

सेन्टर फॉर स्टडीज ऑन हॉलिस्टिक डेवलपमेंट

सेन्टर फॉर स्टडीज ऑन हॉलिस्टिक डेवलपमेंट एक पंजीकृत समिति है इस का उद्देश्य शोध आधारित अध्ययन के माध्यम से विकास के विभिन्न आयामों पर ठोस एवं गम्भीर विमर्श करना है। यह संस्था भौतिक विकास के साथ-साथ मानवीय एवं सामाजिक विकास की ओर अग्रसर है। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संवाद के विभिन्न माध्यमों का उपयोग संस्था की स्वाभाविक प्रक्रिया है। चिंतनशील, शोधार्थी, महानुभावों से संवाद एवं उद्देश्य मूलक सम्बन्ध स्थापित करना संस्था की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

http://dakshinkosaltoday.com/

c